IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

अध्यापक शिक्षा संस्थानो ं के बी.एड. कार्यक्रम के भावी शिक्षको ं मे ं व्यक्तित्व मूल्यो ं की विवेचना

निर्देशिका प्रस्तुतकर्त्री डॉ. शिप्रा गुप्ता सरोज जाखड़ रीडर

एम.एड.छात्रा

सारांश – कक्षा एक छोटा सा समाज होता है जहाँ सभी प्रकार के बच्चे होते है। बुद्धिमान, सुस्त, भावात्मक बुद्धिमान, प्रतिभाशाली, मानसिक रूप से अवरूद्ध शारीरिक रूप से अशक्त धीमा करने वाल` आदि। यदि हम एक प्रकार का दृष्टिकोण अपनाए तो कक्षा का एक बड़ा भाग वंचित रह जाता है और बाद मे ं पिछड़ जाता है। आजकल अध्यापक समावेशन के मूल्यों को पूरी तरह से समझते है क्योकि उन्हे ं एक प्रभावी शिक्षा प्रथा के रूप मे ं इसकी शक्ति का अंदाजा है। समावेशित शिक्षा सभी के लिए एक मानव अधिकार का मुद्दा है, यह एक अच्छी शिक्षा है। इससे एक अच्छी

सामाजिक भावना पैदा होती है। अध्यापक शिक्षा संसथाओं के बी.एड. कार्यक्रम के भावी शिक्षकों मे ं समावेशित शिक्षा के संप्रत्यय को सम्मिलित किया जाए जिससे भावी अध्यापको ं के दृष्टिकोण अभिवृति, मूल्य और उनके व्यक्तित्व मे ं इस शिक्षा के प्रति सकारात्मक विचार उत्पन्न हो सके। प्रस्तुत अध्ययन मे ं शोधकर्त्री द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है और आंकड़ों के संग्रहण हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया है। न्यादर्श के रूप मे ं जयपुर शहर के निजी व सरकारी विद्यालय के 200 विद्यार्थियो ं का चयन किया गया है। निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि अध्यापक शिक्षा संस्थानो ं के बी.एड. कार्यक्रम के भावी शिक्षको ं में व्यक्तित्व मूल्यों पाये जाते है। प्रस्तावना – मूल्य शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से एक व्यक्ति क्षमताओं, दृष्टिकोण मूल्यों के साथ–साथ उस समाज के आधार पर सकारात्मक मूल्यो ं के व्यवहार के अन्य रूपो ं को विकसित करता है।

शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और नैतिक पहलुओ ं में अपने व्यकितत्व विकास के लिए दृष्टिकोण सुनिश्चित करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति के लिए मूल्य शिक्षा आवश्यक है यह छात्रो ं को उनके भविष्य को आकार देने के लिए एक सकारात्मक दिशा प्रदान करता है जिससे उन्हे ं अधिक जिम्मेदार बनाने मे ं मदद मिलती है। माता–पिता के बाद गुरू को ही सबसे ऊपर माना गया है। विद्यार्थी तो एक गीली मिट्टी के समान होता है। शिक्षक उस` जैसा ढालगे

ा वह वैसा ढल जाएगा। यहाँ पर शिक्षक की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण हो।

एक शिक्षक को उसके व्यवसाय के लिए योग्य बनाने हेतु उसके व्यक्तित्व मे ं समस्त शैक्षिक गुणो ं का समावेश जरूरी होता है। इस हेतु भावी शिक्षको ं में शिक्षक शिक्षा संस्थानो ं के विभिन्न कार्यक्रमो ं के माध्यम से विभिन्न व्यक्तित्व मूल्यो ं का विकास किया जाता ह ै

छात्रो ं के सर्वागीण विकास हेतु सर्वप्रथम भावी शिक्षको ं मे ं आर्थिक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य, सैद्धांतिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, राजनैतिक मूल्य, धार्मिक मूल्यों आदि का विकास करना अनिवार्य होता है।

समस्या का औचित्य –

छात्राध्यापको ं को शिक्षक के रूप में अपने विद्यार्थियों के जीवन लक्ष्य निर्माण करने की प्रेरणा देनी चाहिए। केवल लक्ष्य का निर्माण अपर्याप्त है उसकी प्राप्ति के लिए संकल्प दृढ़ इच्छा शक्ति परिश्रम तथा कार्य के प्रति समर्पण भी आवश्यक है। इन सभी मानवीय गुणो ं की प्राप्ति व्यक्तित्व मूल्यों के द्वारा ही संभव है। अतः शोध समस्या के रूप में इस समस्या का चयन किया गया है।

तकनीकी शब्दो ं का परिभाषीकरण –

(1) मूल्य

मूल्य शब्द से तात्पर्य किसी भौतिक वस्तु अथवा मानकिस अवस्था के उस गुण से है जिसके द्वारा मनुष्य के किसी उद्देश्य अथवा लक्ष्य की पूर्ति होती है।

(2) सर्वागीण विकास – सर्वागीण विकास से तात्पर्य बच्चो ं का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और संवेदनात्मक विकास उसकी आयु के अनुरूप हो।

शोध के उद्देश्य –

(1) अध्यापक शिक्षा संस्थानो ं मे ं बी.एड. कार्यक्रम के भावी शिक्षको ं मे ं व्यकितत्व मूल्यों का अध्ययन।

(2) सरकारी और गैर सरकारी अध्यापक शिक्षक संस्थानो ं के बी.एड. कार्यक्रम के भावी शिक्षको ं में व्यक्तित्व मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।

(3) बी.एड. कार्यक्रम के भावी शिक्षको ं की संकाय भिन्नता का उनकी व्यक्तित्व मूल्यों पर पड़ने वाल े प्रभाव का अध्ययन।

(4) बी.एड. कार्यक्रम के भावी शिक्षको ंकी लिगं भिन्नता पर पड़ने वाले व्यक्तित्व मूल्यों के प्रभाव का अध्ययन।

शोध के परिकल्पना –

(1) अध्यापक शिक्षा संस्थानो ं मे ं बी.एड. कार्यक्रम के भावी शिक्षको ं मे ं व्यकितत्व मूल्यों के प्रति कोई सार्थक अंतर नहीं है।

(2) सरकारी और गैर सरकारी अध्यापक शिक्षक संस्थानो ं के बी.एड. कार्यक्रम के भावी शिक्षको ं मे ं व्यक्तित्व मूल्यों के प्रति कोई सार्थक अंतर नहीं है।

(3) बी.एड. कार्यक्रम के भावी शिक्षको ं की संकाय भिन्नता का उनकी व्यक्तित्व मूल्यों पर कोई सार्थक अंतर नहीं है।

(4) बी.एड. कार्यक्रम के भावी शिक्षको ंकी लिगं भिन्नता का उनके व्यक्तित्व मूल्यो ंमें कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध की विधि – प्रस्तुत शाधे ा कार्य मे ं शोधकर्त्री द्वारा

सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। जनसंख्या – प्रस्तुत अध्ययन मे ं जयपुर जिले के बीएड. शिक्षा संस्थानो ं में अध्ययनरत भावी शिक्षको ं का चयन किया गया है।

शोध मे ं प्रयुक्त न्यादर्श – अध्यापक शिक्षा संस्थानों के बी.एड. कार्यक्रम के 200 शिक्षको ं का चयन किया जाएगा। जिसमे ं 100 राजकीय एव ं 100 गैर राजकीय संस्थानो ं के भावी शिक्षक होंगे जिसमे ं 50 महिला एव ं 50 पुरूष भावी शिक्षक लिए जायेगं ।

शोध मे ं प्रयुक्त उपकरण –

प्रस्तुत अध्ययन में शाधे ाकर्त्री द्वारा मानकीकृत प्रश्नावली का प्रयोग किया गया।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ – पस्तुत शाधे ा कार्य में सांख्यिकी के रूप मे ंनिम्न का प्रयोग किया गया है –

1. मध्यमान
2. प्रमाणिक विचलन
3. क्रांतिक अनुपात

शोध का परीसीमांकन –

1. समस्या का क्षेत्र व्यापक होने के कारण सम्पूर्ण क्षेत्र का अध्ययन संभव नहीं है। अतः प्रस्तुत अध्ययन जयपुर जिले के शहरी क्षत्रे तक सीमित है।
2. प्रस्तुत शोध कार्य के लिए सरकारी एव ं गैर सरकारी अध्यापक शिक्षा संस्थानो ं के 100–100 भावी शिक्षको ं को लिया गया है।
3. प्रस्तुत अध्ययन मे ं अध्यापक शिक्षा संस्थानो ं के बी.एड. कार्यक्रम के भावी को सम्मिलित किया गया है।
4. शोध कार्य में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।
5. प्रस्तुत शोध मे ं मानकीकृत परीक्षणो ं का प्रयोग किया गया है।

आँकड़ो ं का विश्लेषण –

वर्ग	विद्यार्थी संख्या (N)	मध्यमान (M)	प्रमाप विचलन (σ)	क्रान्तिक अनुपात C.R.	सार्थकता स्तर	
					.01	.05
सरकारी गैर सरकारी	100 100	35.23 36.18	350.53 359.98	0.019	दोनों स्तरों पर सार्थक अन्तर नहीं हैं।	

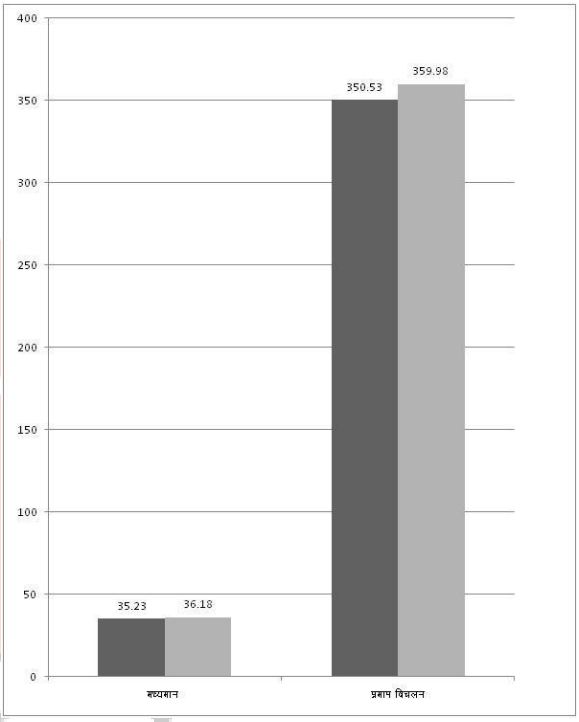

परिणामस्वरूप यह कहा जाता है बीएड. कार्यक्रम के भावी शिक्षकों की लिंग भिन्नता का सरकारी व गैर सरकारी शिक्षको ं का उनके व्यक्तित्व मूल्यो ंमे ंनहीं है।

शोध निष्कर्ष – बी.एड. कार्यक्रम के भावी शिक्षको ंकी लिगं भिन्नता का सरकारी व गैर सरकारी शिक्षको ं का उनके व्यक्तित्व मूल्यों का सार्थक अन्तर है।

सुझाव –

1. यह शोध कार्य जयपुर जिले के शहरी क्षत्रे मे ं किया गया है। अतः अन्य जिलो ं में यह शोध कार्य किया जा सकता है।

2. इस शोध कार्य मे ं 200 शिक्षको ं को शामिल किया गया है। अतः इसे विस्तृत रूप मे ं भी किया जा सकता है।

3. इस शोध कार्य मे ं कुछ मूल्यों का अध्ययन किया गया है। अतः इसे अन्यो ं मूल्यों पर भी किया जा सकता ह ै। संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. कपिल, एच.के (1986–87) :''अनुसध ं ान परिचय'', पृष्ठसंख्या–2
2. राय, पारसनाथ : ''अनुसंधान परिचय'', पष्ठ संख्या–102
3. शर्मा, आर. ए. (1989) :''शिक्षा तकनीकी''
4. शर्मा, आर. ए. :''शैक्षिक अनुसंधान के मुल तत्व'' पृष्ठ संख्या–120
5. सुखिया, एस. पी. (1971) : ''शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व'' पृष्ठ संख्या – 41
6. वर्मा, प्रीति (1994) : ''मनोविज्ञान व शिक्षा में साख्यिकी''